पेरिस
मई २६, २००८

संदेश संख्या – १४७

आशीर्वाद

आशीर्वाद को उपलब्ध एक उत्कृष्ट भक्त ने कृपा कर यह संदेश क्रियावानों के विचारार्थ लिखा है । विभाजनरहित होना भक्ति है और भक्ति ही भगवत्ता है।

गहन आशीर्वाद का भौतिक आवश्यकताओं से कोई संबंध नहीं होता । यह शिष्य जानता है कि सद्गुरु एक समर्पित शिष्य को कभी भी भटकने नहीं देंगे। यही कृपा है ।

अक्टूबर २००५ में रानीखेत (हिमालय) में हुए रिट्रीट के दौरान 'बाबाजी की गुफा' की चढ़ाई चढ़ते समय एक घटना घटी । रास्ते में कई स्थानों में चढ़ाई बहुत खड़ी एवं दुर्गम थी और पहाड़ों के अभ्यस्त नहीं रहने वाले शरीरों के लिए वह वस्तुतः कठिन थी । एक सौ से ज्यादा शिष्य थे और वे कई छोटे–छोटे समूहों में बँट गए थे । गुरूजी के साथ भी एक समूह था । इस शिष्य ने चढ़ाई के लिए एक ऐसा मार्ग चुना जो शरीर के लिए कुछ सुगम था जबकि गुरुजी अधिक कठिन मार्ग से चढ़ रहे थे । शिष्य जब गुफा तक पहुँच गया तो उसे दूसरे शिष्य से मालूम हुआ कि गुरूजी उसके बारे में पूछ रहे थे । उसी समय वह शिष्य पुनः नीचे उतरने लगा । तब तक गुरुजी आधा रास्ता भी तय नहीं कर पाये थे और अपने समूह के शिष्यों के साथ एक स्थान पर विश्राम कर रहे थे । थकावट से हाँफता हुआ शिष्य गुरुजी के पास जाकर उनके चरणों में प्रणाम किया । गुरुजी ने पूछा–तुम कहाँ थे? तुम मेरे साथ क्यों नहीं थे? शिष्य ने उत्तर दिया कि उसने चढ़ाई का सुगम मार्ग चुन लिया था । गुरुजी ने कहा, ''इसमें कोई समझदारी नहीं है । जब तुम गुरु के साथ तीर्थयात्रा पर हो तब गुरु के मार्ग की अपेक्षा तुम सुगम मार्ग क्यों चाहते हो ? मार्ग सुगम हो या दुर्गम, शिष्य को गुरु के साथ रहना है । जब गुरु दुर्गम मार्ग से जाते हैं और शिष्य सुगम मार्ग के लिए उन्हें छोड़ देता है, तो समर्पण कहाँ है? तुम वही क्यों करते हो जो सुविधाजनक है? वैसा क्यों नहीं करते जो सम्यक् है ?'' यह शिष्य शेष चढ़ाई तक गुरुजी के पीछे–पीछे गया । बाद में जब गुफा दर्शन समाप्त हुआ, उस शिष्य की समझदारी में एक विस्फोट घटित हुआ और वह शिष्य अनियन्त्रित रूप से रोने लगा । वह समझ गया था कि उस शरीर को गुरुजी कभी भी भटकने नहीं देंगे। वे आँसू न दुःख के थे न खुशी के । वह शरीर आँसुओं के माध्यम से उस कृपादान का केवल उत्तर दे रहा था । यही कृपा है । कृपा स्वतः घटित होती है । यह माँगी और दी नहीं जाती ।

लोग गुरु का आशीर्वाद कई चीजों के लिए चाहते हैं । कुछ नौकरी चाहते हैं, कुछ धन चाहते हैं, कुछ बच्चा चाहते हैं, और कुछ जुड़वा बच्चे चाहते हैं आदि। ये सभी आवेदन वस्तुतः गलत पते पर दिए गए होते हैं । नौकरी के लिए किसी संस्था में आवेदन देने के बदले गुरु के पास जाया जाता है । ये सभी इच्छायें हैं जो पूर्ण होना चाहती हैं । गुरु कोई नियोजनालय नहीं है और न ही कोई नौकरी देने वाला माध्यम । गुरु ने एक बार कहा था कि जिस तरह वन क्षेत्र में वर्षा वाले बादल आकर्षित होकर स्वतः बरस जाते हैं उसी तरह कृपा स्वतः घटित हो जाती है, गुरु उपस्थित रहे या नहीं रहे, शिष्य उपस्थित रहे या नहीं रहे ।

एक सद्गुरु के शरीर से आशीर्वाद सर्वदा प्रवाहित होता रहता है लेकिन उसे प्राप्त करने के लिए शरीर को शून्यता और समर्पण की अवस्था में होना होगा। आशीर्वाद इच्छाओं का पूर्ण होना नहीं है । सम्भव है कि आशीर्वाद, शिष्य के सांसारिक–दायित्वों के निर्वहन में किसी आवश्यकता को पूरा कर दे परन्तु आशीर्वाद का वह प्रयोजन नहीं । आशीर्वाद निरुद्देश्य होता है और वही कृपा है ।

समर्पण सर्वदा शून्यता में होता है । यह कोई व्यक्ति विशेष या व्यक्तित्व के प्रति नहीं होता बल्कि यह तो जीवन के प्रवाह में प्रयत्न शैथिल्य की चुनाव रहित अवस्था है। समर्पण का घटित होना पूर्णतः कृपा है । तप और स्वाध्याय से यह घनीभूत होता है । आशीर्वाद प्रवाहित होता ही रहता है ।

समर्पण घटित होने पर भी इसे हमेशा के लिए स्वीकृत नहीं माना जा सकता । समर्पण भी खो सकता है और निर्मन की अवस्था फिर से चित्तवृत्ति के चंगुल में चली जा सकती है । अतः इसके प्रति सतत् जागरुक रहना होगा । समर्पण गुरु–ऊर्जा की कृपा से ही होता है । जब स्वाध्याय नहीं होता तब यह ऊर्जा भी नहीं होती । स्वाध्याय, समर्पण, शून्यता, निर्मन, कृपा, आशीर्वाद, पूर्णता–सभी एक हैं और जब यह घटित होता है तभी व्यक्ति योग में होता है ।

क्या कोई शरीर गुरु के पास बिना किसी आशा, बिना किसी आकांक्षा या बिना किसी स्वार्थ के रह सकता है ? ''मैंने गुरु की इतने समय तक सेवा की, अतः मुझे अवश्य ही आशीर्वाद मिलना चाहिए''–ऐसा भी कहा जाता है । यह शरीर एक क्रियावान को जानता है जिसने गुरु की सेवा की किन्तु उसे कुछ दिनों पहले यह कहते हुए सुना गया कि सेवा करने पर मुझे क्या मिला?

आशीर्वाद विस्मय है, रहस्य है, पहेली है । यह उन्हें ही मिलता है, जिन्हें यह मिलता है ।

।। जय आशीर्वाद ।।